परमात्म ऊर्जा

अब मुख्य सर्विस है ही अपनी वृत्ति और दृष्टि को पलटाना। यह जो गायन है नज़र से निहाल, तो दृष्टि और वृत्ति की सर्विस यह प्रैक्टिकल में लानी है। वाचा तो एक साधन है लेकिन कोई को सम्पूर्ण स्नेह और सम्बन्ध में लाना उसके लिए वृत्ति और दृष्टि की सर्विस हो। यह सर्विस एक स्थान पर बैठे हुए एक सेकंड में अनेकों की कर सकते हैं। यह प्रत्यक्ष सबूत देखेंगे। जैसे शुरू में बापदादा का साक्षात्कार घर बैठे हुआ ना! वैसे अब दूर बैठे आपकी पॉवरफुल वृत्ति ऐसा कार्य करेगी जैसे कोई हाथ से पकड़ कर लाया जाता है। कैसा भी नास्तिक, तमोगुणी बदला हुआ देखने में आएगा। अब वह सर्विस करनी है। लेकिन यह सर्विस सफलता को तब पायेगी जब वृत्ति पॉवरफुल होगी। ज़िम्मेदारी तो हरेक अपनी समझते ही हैं।

हरेक को अपनी सर्विस होते हुए भी, यज्ञ की ज़िम्मेवारी भी अपने सेंटर की ज़िम्मेवारी के समान ही समझना है। खुद ऑफर करना है। वाणी के साथ-साथ वृत्ति और दृष्टि में इतनी ताकत है, जो किसके संस्कारों को बहुत कम समय में बदल सकते हो? वाणी के साथ वृत्ति और दृष्टि नहीं मिलती तो सफलता होती ही नहीं। मुख्य यह सर्विस है। अभी से ही बेहद की सर्विस पर बेहद की आत्माओं को आकर्षित करना है। जिस सर्विस को आप सर्विस समझते हो प्रजा बनाने की, वह तो आप की प्रजा के भी प्रजा खुद बनने हैं, वह तो प्रदर्शनियों में बन रहे हैं। अभी तो आप लोगों को बेहद में अपना सुख देना है तब सारा विश्व आपको सुखदाता मानेगा। विश्व महाराजन को विश्व का दाता कहते हैं ना! तो अब आप भी सभी को सुख देंगे तब सभी तुमको सुखदाता मानेंगे। सुख देंगे तब तो मानेंगे। इसलिए अब आगे बढ़ना है। एक सेकंड में अनेकों की सर्विस कर सकते हो।

कोई भी बात में फील करना फेल की निशानी है। कोई भी बात में फील होता है, कोई के संस्कारों में, सम्पर्क में, कोई की सर्विस में फील किया माना फेल। वह फिर फेल जमा होता है। जैसे आजकल रिवाज़ है, तीन-तीन मास में परीक्षा होती है, उसके लिए फेल व पास के नम्बर फाइनल में मिलाते हैं। जो बार-बार फेल होता है वह फाइनल में फेल हो पड़ते हैं। इसलिए बिल्कुल फ्लोलेस बनना है। जब फ्लोलेस बनें तब समझो फुल पास। कोई भी फ्लो होगा तो फुल पास नहीं होंगे।

रीवा-म.प्र.। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के तहत ब्रह्माकुमारीज़ एवं संस्थान के समाज सेवा प्रभाग द्वारा गोविंदगढ़ क्षेत्र के अमिलकी गांव में समाजसेवियों के सम्मान में आयोजित कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज़ की क्षेत्रीय संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी, सर्वेश मिश्रा, शारदा मिश्रा, प्रदीप शुक्ला, ममता शुक्ला, पूजा मिश्रा, अयोध्या मिश्रा, नीरज मिश्रा सहित इस अवसर पर आयोजित नाटक मंचन में सहायक अभियंता राकेश शुक्ला, ब्र.कु. सुभाष और पूरी टीम उपस्थित रहे।

कथा सरिता

हमें लालच नहीं मेहनत करनी है

बहुत पहले की बात है एक गांव में एक कुम्हार और उसकी बीवी रहते थे। कुम्हार स्वभाव से लालची था जबकि उसकी बीवी अच्छे स्वभाव की महिला थी। कुम्हार मिट्टी के बर्तन बना कर अपने घर का गुजारा चलाता था। लेकिन वह इससे सन्तुष्ट नहीं था वह ज़्यादा पैसे कमाना चाहता था। उसने बड़ी मेहनत से कुछ मिट्टी के बर्तन बनाए जिसे वह बेचने के लिए शहर चला गया। उसे अबकी बार अपने मिट्टी के बर्तनों का अच्छा दाम मिलने की उम्मीद थी लेकिन अबकी बार भी उसको पहले वाला ही दाम अपने बर्तनों के लिए मिल रहा था। उसने उसी दाम में अपने सभी बर्तन बेच दिए। बर्तन बेचने के बाद शाम हो गयी थी। वह उसके बाद अपने घर के लिए निकला लेकिन जाते-जाते रात हो गयी। घर जाने के लिए उसको एक जंगल से होकर गुजरना पड़ा।

जंगल में कुम्हार को एक पेड़ के ऊपर एक जिन्न नज़र आया, जिसकी एक चोटी थी। पहले तो वह जिन्न को देखकर डर गया लेकिन तभी उसको अपनी दादी की याद आयी जो उसको जिन्न के बारे में बताती थी कि यदि जिन्न की चोटी हाथ में आ जाए तो वह सब इच्छा पूरी कर देता है।

कुम्हार ने एक तरकीब सोची और जिन्न को बोला मुझे एक परी मिली थी। वह एक जिन्न से शादी करना चाहती थी लेकिन वह उसी जिन्न से शादी करेगी जिसकी एक हाथ लम्बी चोटी हो। कुम्हार की बात को सुनकर जिन्न बहुत खुश हुआ और कुम्हार को बोला मेरी एक हाथ लम्बी चोटी है। इस पर कुम्हार बोला मुझे नहीं लगता तुम्हारी चोटी एक हाथ लम्बी है। इस पर जिन्न परी से शादी करने के चक्कर में कुम्हार को अपनी चोटी दिखाने लगा तभी कुम्हार ने बड़ी चतुराई से उसकी चोटी काट ली। जिन्न बोला यह तुमने क्या किया, तुमने मुझे गुलाम बना लिया! कुम्हार बोला हाँ मैंने तुम्हारी चोटी लेने के लिए तुमसे परी वाली बात बोली।

उसने कहा कि अब तुम मेरी सारी इच्छा को पूरी कर दो। जिन्न ने बोला आप हुक्म करो। कुम्हार बोला तुम मेरे घर को बड़े आलिशान घर में बदल दो और मेरा घर जमींदार के घर के पास रख दो। जिन्न ने ऐसा ही किया उसका घर जमींदार के घर के पास रख दिया और उसका घर जमींदार के घर से भी अच्छा हो गया।

इसके बाद कुम्हार ने जिन्न से बोला तुम मेरी बीवी को गहनों से भर दो और हमारे घर में बहुत से हीरे-जवाहरात रख दो। जिन्न ने ऐसा ही किया। जब कुम्हार ने घर जाकर देखा तो वह बहुत खुश हुआ। कुम्हार ने अपनी बीवी को सारी बात बताई। कुम्हार की बीवी को किसी को कैद करना अच्छा नहीं लगा। कुम्हार ने जिन्न की चोटी को घर के एक बर्तन के अंदर छुपा दिया। इसके बाद कुम्हार और उसकी बीवी के दिन पूरी तरह बदल गए।

जमींदार की बीवी और अन्य गांव की महिलाएं कुम्हार की बीवी के गहने देखने के लिए आने लगे। कुछ दिनों के बाद दीवाली आने लगी तो कुम्हार की बीवी कुम्हार को घर की साफ-सफाई करने को बोलने लगी। कुम्हार ने कहा कि हमको घर की साफ-सफाई करने की क्या ज़रूरत है,हम यह जिन्न से करवा सकते हैं। इसके बाद उसने ताली बजाई और जिन्न हाज़िर हो गया। कुम्हार ने जिन्न को पूरे घर की सफाई करने को बोला इसके बाद जिन्न घर की सफाई करने लगा। जिन्न से सफाई करते हुए वह बर्तन गिर गया जिसमें जिन्न की चोटी थी। जिन्न ने चोटी को उठा लिया। कुम्हार ने उसको यह करते हुए देख लिया। कुम्हार ने चोटी मांगी लेकिन जिन्न इतना बेवकूफ नहीं था। उसने कुम्हार को चोटी नहीं दी और बोला तुमने चालाकी से मेरी चोटी लेकर मुझे गुलाम बना लिया था लेकिन अब मैं तुम्हारी जो पहले हालत थी वही हालत कर दूंगा। यह कहकर जिन्न ने कुम्हार का घर वैसा ही कर दिया जैसा पहले था। और उनके सारे गहने भी ले लिए। कुम्हार इससे बहुत दुःखी हो गया। कुम्हार की बीवी बोली आपके हाथ में बर्तन बनाने का हुनर है आप फिर से बर्तन बनाइये। इसके बाद कुम्हार फिर से बर्तन बनाने लगा।

शिक्षा : इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें लालच न करके मेहनत से काम करना चाहिए। जिस प्रकार कुम्हार अमीर बनना चाहता था और उसने लालच किया लेकिन बाद में उसको अपने किये की सज़ा मिल गयी।

बिना संघर्ष जीवन नहीं

एक दिन एक लड़के को अपने बगीचे में टहलते हुए एक टहनी से लटकता हुआ एक तितली का कोकून दिखाई दिया। अब हर रोज़ वो लड़का उसे देखने लगा, और एक दिन उस लड़के ने नोटिस किया कि उस कोकून में एक छोटा-सा छेद बन गया है। उस दिन वो वहीं बैठ गया और घंटों तक उसे देखता रहा। उसने देखा कि तितली उस खोल से बाहर निकलने की बहुत कोशिश कर रही है, पर बहुत देर तक कोशिश करने के बाद भी वो तितली उस छेद से नहीं निकल पायी, और फिर वो बिल्कुल शांत पूर्वक हो गयी मानो जैसे कि उसने हार मान ली हो।

इसलिए उस लड़के ने निश्चय किया कि वो उस तितली की मदद करेगा। फिर उस लड़के ने एक कैंची उठायी और कोकून के छेद को इतना बड़ा कर दिया कि वो तितली आसानी से बाहर निकल के आ सके। और फिर यही हुआ कि तितली बिना किसी संघर्ष के बहुत आसानी से बाहर निकल कर आ गयी, पर उसका शरीर सूजा हुआ था और उसके पंख भी सूखे हुए थे।

वो लड़का उस तितली को ये सोच कर देखता रहा कि तितली किसी भी समय अपना पंख फैला का उड़ने लगेगी, पर ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। इसके बाद बेचारी तितली कभी भी उड़ ही नहीं पाई और फिर तितली को अपनी बाकी की ज़िंदगी इधर-उधर घिसटते हुए बितानी पड़ी। वो लड़का अपनी दया और जल्दबाजी में ये नहीं समझ पाया कि दरअसल कोकून से निकलने की प्रक्रिया को प्रकृति ने इतना कठोर इसलिए बनाया है ताकि ऐसा करने से तितली के शरीर में मौजूद तरल उसके पंखों में पहुंच सके और वो छेद से बाहर निकलते ही उड़ सके।

वास्तव में क भी-क भी हमारे जीवन में संघर्ष ही वो चीज़ होती है जिसकी हमें सचमुच बहुत ज़रूरत होती है। यदि हम बिना किसी संघर्ष के सब कुछ पाने लगेंगे तो हम भी एक अपंग के समान हो जायेंगे। फिर हम किसी भी मेहनत और संघर्ष के कभी उतने मजबूत नहीं बन पाएंगे जितनी हमारी क्षमता है। इसलिए जीवन में आने वाले कठिन पलों को अच्छे दृष्टिकोण से देखिये वो आपको कुछ ऐसा सीखा जाएंगे जो आपकी ज़िन्दगी की उड़ान को मुमकिन बना पायेंगे।